Otto Böhtlingk & Rudolph Roth: Sanskrit-Wörterbuch, Part 4, Petersburg 1865

णातेः निषिञ्चेत् ÇÂṄKH. GṚHJ. 1,19.20. नस्तःकर्मन् *das in-die-Nase-Stekken, Schnupfen* SUÇR. 2,297,6.

नस्तित (von नस्ता) adj. *dem ein Loch in die Nasenscheidewand gebohrt oder gebrannt worden ist; an der Nase gefesselt, mit einem Nasenring versehen* AK. 2,9,63. H. 1260.

नस्तोत (नस्त + ओत) adj. = नस्तित, नस्योत RAMÂṆ. zu AK. ÇKDR.

नस्य (von 1. नस्) P. 6,1,63, Vârtt. 2. 3. 1) adj. *in der Nase befindlich:* प्राण ÇAT. BR. 12,3,1,8. — 2) f. आ *a) Nase* TRIK. 2,6,28. H. ç. 120. (नंस्या). — *b) der Strick, welcher dem Zugvieh durch die Nase gezogen wird,* MIT. II,91, *b*, 3 v. u. (nach STENZLER; das Werk steht uns nicht zu Gebote). Am Ende eines adj. comp.: छिन्ननस्येन यानेन JÂGṆ. 2,299. Vgl. नास्य. — 3) n. *a) die Härchen in der Nase* (nach MAHÎDH.) VS. 19, 90. — *b) Niesemittel, Errhinum* überh. RATNÂM. im ÇKDR. औषधमौषधसिद्धो वा स्नेहो नासिकाभ्यां दीयत इति नस्यम् SUÇR. 2,235,21. 236,1. fgg. 1,176,7. 181,11. 182,9. °विधि 10,7. Verz. d. B. H. No. 929. 958. लक्ष्मणाय ददौ नस्यं सुषेणः परमौषधीम्। स तस्या गन्धमाघ्राय विशल्यः समपद्यत ॥ R. 6,71,24. 83,55. धूपैरञ्जनयोगैश्च नस्यकर्मभिरेव च। भेषजैः स चिकित्स्यः स्यात् MBH. 12,417.

नस्योत (नसि, loc. von 1. नस्, + ओत) adj. *an der Nase gefesselt, mit einem Nasenring versehen* AK. 2,9,63. H. 1260. नस्योता नेनीयते TS. 2,1,1,2. नस्योत इव गोवृषः MBH. 3,1142. subst.: नस्योतवद्यस्य वशे च लोकः BHÂG. P. 6,3,12.

नस्वन्त् (wie eben) adj. f. नस्वती *benaset* AV. 10,1,2.

1. नह्, नह्यति und °ते DHÂTUP. 26,57. परिणहेत् MBH. 1,1406; नाह्; नत्स्यति, नद्धा KÂR. 6 aus SIDDH. K. zu P. 7,2,10. P. 8,2,34; अनात्सीत्, अनद्ध VOP. 11,7; नद्धुम्, नद्ध; *binden, knüpfen; úmbinden, anlegen:* यथा युगं वर्त्रया नह्यन्ति ṚV. 10,60,8. अत्रानहो नह्यतन 53,7. वर्मैवैतदग्नये नह्यति ÇAT. BR. 1,3,3,14. बर्सम् TS. 2,5,3,2. तलं नह्यमानम् ÂÇV. GṚHJ. 3,12. नह्यमान *gebunden, gefesselt* BHÂG. P. 5,14,38. med. *sich anlegen* AV. 19,20,3. *sich die Rüstung anlegen, sich rüsten:* योत्स्यमाना अनह्यन्त MBH. 4,1016. नद्ध *gebunden, geknüpft, verbunden, befestigt* H. 438. MED. dh. 9. उष्णीषं तिर्यङ्नद्धम् LÂṬ. 8,6,4. माला R. 4, 12,19. नद्धं च भाजनम् — तुलार्धमभवत् MBH. 14,1929. युग 2,1932. SÛRJAS. 12,73. कञ्चुकस्ते ऽपि नद्धः MÂRK. P. 25,14. खर्जूरीस्कन्धनद्ध *angebunden an* RAGH. 4,57. लताविताननद्धे द्वे चक्रतुः शरणे *befestigt* R. GORR. 2,56,20. अस्मत्समयनद्धाः HARIV. 5199. *umbunden, umwunden:* दिव्यैश्च कवचैर्नद्धाः HARIV. 12946. तूष्याङ्गदनद्धबाहु 13139. R. 5,14,15. अमृतोत्पादने नद्धो भुजंगेनेव मन्दरः 24,26. काञ्चनपट्टनद्धा शक्तिः MBH. 5,7210. रथः काञ्चनपट्टनद्धः BHÂG. P. 8,15,5. ओष्ठाभ्यामम्बूकृतमाह नद्धम् *durch die Lippen gebunden,—gehemmt,* von einer fehlerhaften Aussprache der Laute ṚV. PRÂT. 14,2. *überzogen, durchzogen, eingelegt:* तोयातिभाराम्बुदवृन्दनद्धं नभः HARIV. 8799. शिरानद्ध (तूप) KATHÂS. 12,52. (तरुषण्ड) नानागुल्मलता° R. 4,13,13. नानाधातुशतैर्नद्धानचलान् MBH. 3,2406. शैलेयनद्धेषु शिलातलेषु KUMÂRAS. 1,56. स्वक्षान्क्षेमनद्धान् MBH. 2,1915. घण्टाः मशङ्कास्तपनीयनद्धाः HARIV. 13094. 13096. नद्धा मणिभिः MEGH. 77, v. l. für बद्धा. नद्ध = उद्धत MED. dh. 9. n. *Band, Knoten:* शालाया नद्धानि वि चृतामसि AV. 9,3,1. 2. नद्धविमोक GOBH. 2,4,3. — Vgl. गिरिणद्ध, गिरिनद्ध. — caus. *zusammenbinden lassen:* वस्त्ररत्नादि नाहयेत् BHAVISHJA-P. in Verz. d. Oxf. H. 31, *b*, N. 3. — intens. नानह्यते P. 6,4, 24, Sch.

— अप 1) *zurückbinden:* अप नह्यामि ते बाहू अपि नह्याम्यास्यम् AV. 7,70,5. — 2) *losbinden:* अपनह्य वासम् MBH. 3,13309.

— अपि oder पि (dieses in der späteren Sprache vorzugsweise) 1) *anbinden, befestigen, anlegen:* कवचं पिनह्य BHAṬṬ. 3,47. पिनह्य तानि पुष्पाणि केशेषु MBH. 13,2352. अपिनह्य कुण्डले 4,301. कुण्डले भिक्षितुं तस्य क्षत्रियया पिनद्धे 1,759. पिनद्धकम्बु 4,54. मन्दारमाला हरिणा पिनद्धा ÇÂK. 161. पिनद्धमङ्गलप्रतिसर DAÇAK. in BENF. Chr. 201,5. med. *sich umbinden:* स्रजः KÂTJ. ÇR. 14,1,23. PÂR. GṚHJ. 2,14. अपिनद्ध = पिनद्ध = आमुक्त = प्रतिमुक्त AK. 2,8,3,33. H. 765. — 2) *zubinden, durch Binden verhüllen; unterbinden; verstopfen:* अग्नापिनद्धं मधु पर्यपश्यत् *verdeckt* ṚV. 10,68,8. पिनद्धा (निबद्धा MBH. 3,2662) धूमजालेन प्रभामिव विभावसोः R. 5,18,4. कुसुमं पिनद्धं पाण्डुपत्रेद्रेण ÇÂK. 18. द्यौः — अतिरजोपिनद्धा VARÂH. BṚH. S. 19,20, v. l. अत्रैव वो ऽपि नह्याम्युभे आर्त्नी इव ज्यया ṚV. 10,166,3. आस्यम् AV. 7,70,4. 5. मेढ्रम् 95,3. भगम् 1,14,4. प्राणम् 5,8,4. 9,3,18. उल्लीषेणाक्ष्यौ AIT. BR. 6,1. यष्टिभिश्चर्म पिनह्य KAUÇ. 39. अपिनद्धो मरिष्यसि ÇAT. BR. 1,4,3,20. — 3) पिनद्ध *durchzogen:* इन्द्रायुधपिनद्धाङ्ग (घन) MBH. 13,976. नानाधातु° (शृङ्ग) HARIV. 4593. MBH. 6,199. बहुधातुपिनद्धाङ्गैर्हेमवच्छिखरैरिव 1,6966. — घनो यथा खे चिरमापिनद्धः (?) MBH. 6,2599.

— अभि *verbinden, zubinden:* अभिनद्धात्त KHÂND. UP. 6,14,1. — Vgl. अभिनह्न.

— अव *zubinden, zudecken, überdecken, beziehen:* अश्वं चर्मणा KÂTJ. ÇR. 13,3,16. AV. 9,3,8. अवनद्धं अथितमप्स्वर्त्तः 1,116,24. चर्मावनद्ध M. 6,76 = MBH. 12,12463. पिशितपङ्कावनद्धास्थि PRAB. 71,1. हेममालावनद्ध (रथ) MBH. 7,78. गदा हेमपट्टावनद्धाः 8141. पुष्पभारावनद्ध (पादप) R. 5,9,8. द्यौः — अतिरजोऽवनद्धा VARÂH. BṚH. S. 19,20. शिरावनद्ध 67, 59. 84. — Vgl. अवनद्ध.

— पर्यव, partic. पर्यवनद्ध P. 8,4,38, Sch.

— प्राव, partic. प्रावनद्ध P. 8,4,38, Sch.

— आ 1) *anbinden:* वर्त्रायां दार्वानह्यमानः ṚV. 10,102,8. हेषु नह्य वृषाजिनम् AV. 6,67,3. आनद्धाभरणैः कायैः MBH. 6,5525. आनद्ध = बद्ध = संदित TRIK. 3,3,214. H. an. 3,342. MED. dh. 27. — 2) med. *sich verstopfen:* आनह्यते नासा SUÇR. 2,369,10. 373,6. आनद्ध *verstopft* 21, 21. *bedeckt, überzogen* 1,22,3. 16. — Vgl. आनद्ध, आनाह.

— निरा, partic. निराणद्ध P. 8,4,2, Sch.

— पर्या *zubinden, verhüllen:* सोमपर्याणहनेन पर्याणह्यति ÇAT. BR. 3, 3,4,6. 7. पर्याणद्ध AV. 14,2,12. P. 8,4,2, Sch.

— प्रत्या *darauf decken* ÇAT. BR. 3,3,4,8.

— व्या, partic. व्यानद्ध *durchzogen:* उरण्क्रमिन्द्रवर्णाव्यानद्धम् HARIV. 6884.

— उद् 1) *aufbinden, in die Höhe binden:* मुक्तागुणोन्नद्धं मौलिम् RAGH. 17,23. उन्नद्धचूड 18,50. — 2) (*von den Fesseln befreien*) *herausdrängen, heraustreiben:* अस्थ्यवयवो ऽस्थिमध्यमनुप्रविश्य मज्जानमुन्नह्यति SUÇR. 1,301,9. मात्रावमुन्नह्यति मांसपिण्डम् 288,2. KAUÇ. 64. — 3) (*sich der Fesseln entledigen*) *hervorbrechen, hervorkommen aus:* ततः प्रसन्ना पृथिवी तपसा तस्य — पुनरुन्नह्य सलिलात् MBH. 3,11016 (S. 570). — उन्नद्ध

Institute of Indology & Tamil Studies, Cologne University, Germany 9.2.2007